● वर्ष-2
● अंक-97
रायपुर, शुक्रवार
09 दिसंबर 2022
● पृष्ठ-6
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

इन दिनों

✍ शशांक शर्मा

विधानसभा चुनाव में जीत-हार के मायने

दो राज्यों में विधानसभा चुनाव के साथ छत्तीसगढ़ में भानुप्रतापपुर विधानसभा सीट के लिए उपचुनाव के परिणाम घोषित हो गए। गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। हिमाचल प्रदेश में मतदाता हर पांच साल में सरकार बदल देती है। यह मानसिकता गुरुवार को घोषित परिणाम में देखने को मिली जब कांग्रेस पार्टी को स्पष्ट बहुमत मिला है। चुनाव में हार जीत राजनीतिक प्रक्रिया के दो पहलू है। यह न तो स्थायी है और न ही अनुमान लगाया जा सकता है। जनता ने अपना मत किस उम्मीदवार या किस पार्टी के नाम कर दिया है। यह तो इवीएम की पेटी खुलने के बाद ही पता चलता है। लेकिन चुनाव की घोषणा के बाद से मतदान होने तक राजनीतिक पार्टियां जिस तरह एक-एक सीट को जीतने के लिए अपना दमखम लगाती है, बहुमत प्राप्त करने के लिए योजनाएं और रणनीति बनायी जाती है। उसका लाभ भी चुनाव के परिणाम में मिलता है। अब गुजरात की बात करें तो 2017 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस पार्टी के बीच एक कड़ी टक्कर देखी गई थी। भाजपा 100 का आंकड़ा भी नहीं छू पायी थी और कांग्रेस पार्टी ने 77 सीटों पर जीत हासिल की थी। भले ही भाजपा जीत गई, उसकी सरकार बन गई लेकिन कांग्रेस पार्टी ने जिस ताकत से चुनाव लड़ा उससे पूरे देश में एक संदेश गया। इसका मतलब है कि चुनाव में राजनीतिक पार्टियों के मेहनत और उसका परिणाम देश भर में एक संदेश देता है। इस बार गुजरात में कांग्रेस पार्टी ने चुनाव को गंभीरता से नहीं लिया। शायद आम आदमी पार्टी की सक्रियता के कारण पार्टी के नेताओं को लगा हो कि ज्यादा कुछ हासिल होने वाला नहीं है, इसलिए पूरी ताकत हिमाचल प्रदेश में क्यों न लगाई जाए? अगर यह रणनीति थी तो वह सही साबित हुए। हिमाचल प्रदेश में 68 में से 40 सीटें जीत कर कांग्रेस सफल हो गई। लेकिन गुजरात में 282 में से कांग्रेस केवल 17 सीटें ही जीत पायी। देश की सबसे पुरानी पार्टी का किसी बड़े राज्य में ऐसा प्रदर्शन पूरी राजनीति को प्रभावित करती है। लोकतंत्र में 2 मजबूत पार्टियों का होना आवश्यक है। एक तीसरा विकल्प भी होना चाहिए कि दोनों पार्टियों से जनता का मोह भंग हो जाए तो वह तीसरी को मौका दे। लोकतंत्र में अगर केवल सत्ता पक्ष ही मजबूत रहा और विपक्ष लगातार कमजोर होती जाए तो स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए कांग्रेस पार्टी के आला नेता के विचार जो भी हो लेकिन छोटे से छोटे चुनाव को भी पूरे दमखम के साथ लड़ना चाहिए। यह बात भारतीय जनता पार्टी से सीखी जा सकती है। नगर निगम के चुनाव भी पार्टी लोकसभा और विधानसभा के चुनाव की तरह लड़ती है। एक चुनाव खत्म होता है और दूसरे चुनाव की तैयारी शुरु हो जाती है। हार-जीत अपनी जगह है, लेकिन यह संदेश तो जाता है कि पार्टी हर चुनाव को गंभीरता से लेती है। हिमाचल प्रदेश में भाजपा भले ही हार गई हो लेकिन 25 सीटों पर जीत हासिल करके एक मजबूत विपक्ष के रुप में खड़ी हो गयी। इधर छत्तीसगढ़ के भानुप्रतापपुर सीट पर कांग्रेस पार्टी को जीत मिली है। पिछले 4 वर्षों में यह पांचवां उपचुनाव है और सभी में कांग्रेस पार्टी जीत कर आई है। 15 साल लगातार सत्ता में रहने के बाद 2018 में भाजपा को कांग्रेस के हाथों करारी हार मिली थी तब भाजपा के मात्र 15 विधायक चुनकर आए थे। भानुप्रतापपुर के उपचुनाव का अपना महत्व है। एक तो इस चुनाव के बाद केवल एक साल का समय है, जब विधानसभा के आम चुनाव होंगे। भाजपा लगातार संगठन को मजबूत और सक्रिय करने पार्टी के कार्यकर्ताओं में उत्साह जगाने के लिए कोशिश कर रही है। अगर यह उपचुनाव भाजपा के पक्ष में जाता तो पार्टी को संजीवनी मिल जाती है, लेकिन ऐसा हो सका। कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार सावित्री मंडावी ने भाजपा के उम्मीदवार ब्रम्हानंद नेताम को 21 हजार से अधिक मतों से पराजित कर दिया। इस चुनाव में सर्व आदिवासी समाज के उम्मीदवार अकबर कोर्राम ने भी 23 हजार से अधिक मत प्राप्त किए। स्वाभाविक है भाजपा खेमे में निराशा होगी और कांग्रेस का उत्साह चरम पर होगा। चुनाव घोषणा होने के बाद जिस तरह यह चुनाव संपन्न हुआ उससे कई सवाल उठते है। जिसकी चर्चा बाद में होगी।

गुजरात में फिर कमल, हिमाचल में कांग्रेस

गुजरात में पहली बार चुनाव लड़ रही आम आदमी पार्टी के खाते में गई 5 सीट

अहमदाबाद। देश के 2 बड़े राज्य गुजरात और हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव के नतीजों के साथ-साथ कई राज्यों में हुए उपचुनाव के नतीजे भी आए हैं। गुजरात में दो चरणों में 182 सीटों के लिए विधानसभा चुनाव में वोट डाले गए थे। गुजरात में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत हासिल की है। भाजपा की लगातार यह सातवीं जीत है। भाजपा पिछले 27 सालों से सत्ता में है। फाइनल नतीजों के मुताबिक गुजरात में भाजपा ने 182 में से 156 सीटों पर जीत हासिल की है। वहीं, कांग्रेस अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन करते हुए सिर्फ 17 सीटों पर ही जीती। गुजरात में पहली बार चुनाव लड़ रही आम आदमी पार्टी के खाते में 5 सीट गई हैं। जबकि अन्य चार जगह जीतने में कामयाब हुए हैं। हिमाचल में भाजपा को बड़ा झटका लगा है। हिमाचल में रिवाज बदलने का नारा देने वाले भाजपा 25 सीटों पर सिमट गई है। कांग्रेस ने राज बदलते हुए 40 सीटों पर जीत हासिल की है। अन्य के खाते में 3 सीटें गई हैं।

– ओडिशा के पदमपुर विधानसभा सीट के उपचुनाव में बीजद की वर्षा सिंह बरिहा ने 42,679 मतों से जीत दर्ज की। बरिहा दिवंगत विधायक विजय रंजन सिंह बरिहा की बड़ी बेटी हैं। विजय रंजन सिंह बरिहा के निधन के कारण इस सीट पर उपचुनाव कराए जाने की जरूरत पड़ी। उनका मुकाबला भाजपा से था।

– रामपुर विधानसभा उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी आकाश सक्सेना ने बृहस्पतिवार को अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी (सपा) के आसिम राजा को हराया। भाजपा ने इस सीट पर पहली बार कब्जा किया है। जिला निर्वाचन कार्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक सक्सेना ने राजा को 34136 मतों से हराया। भाजपा आजादी के बाद पहली बार रामपुर विधानसभा सीट से चुनाव जीती है। इससे पहले करीब 40 साल से यहां सपा के वरिष्ठ नेता आजम खां ही विधायक रहे।

– मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव में समाजवादी पार्टी (सपा) प्रत्याशी डिंपल यादव ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा के रघुराज सिंह शाक्य को दो लाख 88 हजार 461 मतों से हराकर यह सीट सपा के पास बरकरार रखी। चुनाव आयोग द्वारा घोषित परिणाम के मुताबिक डिंपल ने दो लाख 88 हजार 461 मतों से जीत हासिल की। डिंपल ने छह लाख 18 हजार 120 मत हासिल किये जबकि शाक्य को तीन लाख 29 हजार 659 वोट मिले।

– उत्तर प्रदेश की खतौली विधानसभा सीट के उपचुनाव में समाजवादी पार्टी गठबंधन के सहयोगी राष्ट्रीय लोकदल के प्रत्याशी मदन भैया ने अपनी निकटतम प्रतिद्वंद्वी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की राजकुमारी सैनी को 22143 मतों से हराकर भाजपा से यह सीट छीन ली। चुनाव आयोग द्वारा घोषित परिणाम के मुताबिक मदन भैया को 97 हजार 139 मत मिले जबकि राजकुमारी को 74 हजार 996 वोट हासिल हुए।

– सत्तारूढ़ कांग्रेस ने सरदारशहर विधानसभा सीट पर अपना कब्जा कायम रखा है। इस सीट के लिए हुए उपचुनाव में पार्टी के प्रत्याशी अनिल कुमार शर्मा ने 26 हजार से अधिक वोट से जीत दर्ज की। निर्वाचन विभाग के अनुसार कांग्रेस प्रत्याशी अनिल कुमार शर्मा को कुल 91357 वोट मिले, भाजपा के भाजपा के अशोक पींचा को 64505 वोट मिले जबकि राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के उम्मीदवार लालचंद को 46753 वोट मिले।

– भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बिहार में सत्तारूढ़ महागठबंधन से कुढ़नी सीट छीन ली। इस सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार केदार प्रसाद गुप्ता ने नीतीश कुमार की जनता दल यूनाइटेड के उम्मीदवार मनोज सिंह कुशवाहा को 3,645 मतों से पराजित कर दिया। नीतीश कुमार कुछ ही महीने पहले भारतीय जनता पार्टी से अलग होकर राष्ट्रीय जनता दल के साथ गठबंधन कर महागठबंधन में शामिल हुए थे।

भानुप्रतापपुर उपचुनाव में जीती कांग्रेस

कांकेर। भानुप्रतापपुर विधानसभा सीट के उपचुनाव का दंगल कांग्रेस ने जीत लिया है। कांग्रेस प्रत्याशी सावित्री मंडावी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी भाजपा के ब्रह्मानंद नेताम को भारी मतों से हराया है। सावित्री मंडावी भानुप्रतापपुर के दिवंगत विधायक मनोज मंडावी की पत्नी हैं। इस जीत के साथ ही कांग्रेस अपनी इस सीट को बचाने में कामयाब हो गई। अंतिम 19वें राउंड की मतों की गिनती के समाप्ति के बाद कांग्रेस प्रत्याशी सावित्री मंडावी को 65479 मत प्राप्त हुए हैं, इस आधार पर 21171 वोट से भाजपा को हराकर जीत दर्ज कर लिया। भाजपा के ब्रह्मानंद नेताम को 44308 मत हासिल हुआ हैं एवं सर्व आदिवासी समाज के निर्दलीय प्रत्याशी अकबर राम कोर्राम को 23417 मत हासिल हुआ है। शानदार जीत के बाद कांग्रेस नेता एवं कार्यकर्ताओं में जश्न का माहौल है।

■ सावित्री मंडावी ने ब्रह्मानंद नेताम को भारी मतों से हराया

उपचुनाव में 19वें राउंड की मतों की गिनती के समाप्ति केबाद भाजपा के ब्रम्हानंद नेताम को 44308 मत हासिल हुए। कांग्रेस की सावित्री मंडावी को 65479 मत हासिल हुए। घनश्याम जुर्री को 2485 मत, डायमंड नेताम को 813 मत, शिवलाल पुडो 1309 मत, अकबर कोर्राम को 23417, दिनेश कल्ला को 3851 मत, नोटा 4251, कुल मतदान 145966 हुए थे। इस तरह कांग्रेस छत्तीसगढ़ में लगातार पांचवें उपचुनाव जीतने में सफलता हासिल की है। इससे पहले कांग्रेस ने चित्रकोट, दंतेवाड़ा, मरवाही, खैरागढ़ उपचुनाव में जीत हासिल की थी। इसके बाद अब भानुप्रतापपुर में रिकॉर्ड मतों से जीत हासिल की है।

यह आने वाले दिनों का स्पष्ट संकेत-मोदी

बिहार। देश में गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव के नतीजों के साथ-साथ कई उपचुनाव के नतीजे आए हैं। जिस उपचुनाव पर सबसे ज्यादा नजर थी, उसमें बिहार की कुढ़नी सीट भी थी। कुढ़नी सीट पर मुख्य मुकाबला जदयू और भाजपा के बीच था। बिहार में एनडीए गठबंधन से अलग होने के बाद यह पहला अवसर था, जब भाजपा और जदयू आमने-सामने थी। इस चुनाव में भाजपा के उम्मीदवार केदार प्रसाद गुप्ता ने जीत हासिल की है। उन्होंने जदयू उम्मीदवार मनोज सिंह कुशवाहा को हराया है। इस जीत के अलग-अलग मायने निकाले जा रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि कुढ़नी में खुद नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव प्रचार करने पहुंचे थे। दोनों नेताओं की ओर से पूरा जोर भी लगाया गया था। बावजूद इसके भाजपा ने यहां से जीत हासिल करने में कामयाबी पाई है। इसके बाद अब भाजपा जबरदस्त तरीके से नीतीश कुमार पर हमलावर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शाम में भाजपा कार्यालय में अपने संबोधन के दौरान बिहार में भाजपा की कुढ़नी सीट पर मिली जीत का विशेष तौर पर जिक्र किया। अपने बयान में उन्होंने साफ तौर पर कहा कि आने वाले दिनों का स्पष्ट संकेत है।

प्रमुख समाचार

कांग्रेस विधायकों को खरीद-फरोख्त से बचाना होगा, भाजपा कुछ भी कर सकती है-भूपेश

श्रीनगर। हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव की मतगणना में कांग्रेस की जीत के संकेत मिलने के बीच छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बृहस्पतिवार को कहा कि पार्टी को अपने विधायकों को खरीद-फरोख्त से बचाना होगा, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कुछ भी कर सकती है। कांग्रेस पार्टी ने बघेल को हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए वरिष्ठ पर्यवेक्षक नियुक्त किया था। उन्होंने इन अटकलों को खारिज किया कि हिमाचल प्रदेश से पार्टी के नवनिर्वाचित विधायकों को छत्तीसगढ़ स्थानांतरित किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने रायपुर में संवाददाताओं से कहा, मतगणना अभी भी जारी है और हमें अंतिम नतीजों की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमें विश्वास था कि हम हिमाचल प्रदेश में सरकार बनाएंगे और रुझान बताते हैं कि हम वहां जीत की ओर बढ़ रहे हैं। बघेल ने कहा कि वह बृहस्पतिवार को हिमाचल प्रदेश जाएंगे।

भाजपा का किला भेदने में सफल रहे, अगली बार जीतें-केजरीवाल

अहमदाबाद। गुजरात चुनाव में अपनी ताकत झोंकने वाले आम आदमी पार्टी को निराशा हाथ लगी है। आम आदमी पार्टी सिर्फ 5 सीटों पर ही जीत हासिल कर पाई है। हालांकि, आम आदमी पार्टी इसे बड़ी सफलता मान रही है। गुजरात में इन 5 सीटों पर जीत के साथ ही आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल हो गया है। इसको लेकर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया है। इसके साथ ही गुजरात के चुनावी नतीजों पर उन्होंने कहा कि अगली बार जनता के आशीर्वाद से भाजपा के किले को फतह करने में कामयाब होंगे। उन्होंने कहा कि गुजरात में आम आदमी पार्टी को 13त्न वोट मिले हैं। अरविंद केजरीवाल ने साफ तौर पर कहा कि 10 साल पहले बनी पार्टी के लिए राष्ट्रीय पार्टी बनना गर्व की बात है। देश में बहुत कम राष्ट्रीय पार्टी हैं, उनमें से आम आदमी पार्टी एक है। इसके साथ ही अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गुजरात के लोगों को मैं खासतौर पर शुक्रिया अदा करना चाहता हूं, क्योंकि आप लोगों से बहुत प्यार मिला, बहुत सम्मान मिला, विश्वास मिला और मैं जिंदगी भर आपका आभारी रहूंगा।

डिंपल यादव ने मैनपुरी में रिकॉर्ड जीत दर्ज की

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव के निधन की वजह से खाली हुई मैनपुरी की लोकसभा सीट पर उनकी बहू और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव ने रिकॉर्ड जीत दर्ज की है। डिंपल ने 2.88 लाख वोटों के बड़े अंतर से बीजेपी के रघुराज शाक्य को पराजित कर दिया है। डिंपल यादव को उपचुनाव में 6 लाख 18 हजार 120 वोट प्राप्त हुए। उनके मुकाबले बीजेपी उम्मीदवार रघुराज शाक्य को 3 लाख 29 हजार 659 वोट मिले हैं। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी लोकभा उपचुनाव में सपा की उम्मीदवार डिंपल यादव की जीत पर पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि जिन लोगों ने वोट देकर नेताजी को श्रद्धांजलि दी है, मैं उन सभी का आभार प्रकट करता हूं। मैं इस जीत के लिए पार्टी के सभी नेता और कार्यकर्ताओं का भी आभार प्रकट करता हूं। वहीं डिंपल यादव ने कहा कि मैं समाजवादी पार्टी के सभी समर्थकों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने हमारी जीत के लिए कड़ी मेहनत की। मुझ पर विश्वास करने के लिए मैं मैनपुरी के लोगों का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूं।

आजम खान के गढ़ में खिला कमल, बड़े अंतर से जीते आकाश सक्सेना, खतौली में भाजपा की हार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के रामपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा का कमल खिला है। भाजपा के उम्मीदवार आकाश सक्सेना ने 34000 से अधिक वोटों से जीत हासिल की है। आकाश सक्सेना ने समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार असीम राजा को हराया है। रामपुर में भाजपा की जीत के चर्चा इसलिए भी खूब हो रही है क्योंकि कहीं ना कहीं यह शहर आजम खान का गढ़ है। आजम खान को विधानसभा से अयोग्य घोषित किए जाने के बाद यहां उपचुनाव हो रहे थे। आजम खान की प्रतिष्ठा दांव पर थी। लेकिन यहां भाजपा ने कमल खिलाने में कामयाबी हासिल की है। इस साल के शुरुआत में हुए चुनाव में यहां आजम खान ने आकाश सक्सेना को हराया था। यह पहला मौका है जब रामपुर में आजम खान के सीट पर भाजपा ने जीत हासिल की है। आजम खान यहां से पहली बार 1980 में विधायक बने थे। तब से वह 1995 तक लगातार विधायक रहे। फिर 2002 में फरवरी से 27 अक्टूबर 2022 तक आजम खान या उनके परिवार का कोई सदस्य रामपुर से विधायक रहा है। इस रामपुर में इस बार भाजपा ने इतिहास रच दिया है।

चक्रवाती तूफान 'मैंडूस' नौ दिसंबर को पुडुचेरी और श्रीहरिकोटा के बीच गुजरेगा

चेन्नई। बंगाल की खाड़ी के ऊपर बने चक्रवाती तूफान 'मैंडूस' के नौ दिसंबर को आधी रात को पड़ोसी राज्य आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा और पुडुचेरी के बीच से गुजरने की संभावना के मद्देनजर तमिलनाडु के कई हिस्सों में भारी बारिश के आसार हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना कम दबाव का क्षेत्र छह दिसंबर को गहरे दबाव में तब्दील हो गया था। बुधवार को यह चेन्नई से लगभग 750 किलोमीटर दूर स्थित था। आईएमडी की ओर से बृहस्पतिवार को जारी बुलेटिन के अनुसार, चक्रवाती तूफान 'मैंडूस' कार्इकल के दक्षिण पूर्व में लगभग 500 किलोमीटर दूर बंगाल की खाड़ी के दक्षिण पश्चिम में मौजूद है। बुलेटिन के अनुसार, '' इसके पश्चिम-उत्तर पश्चिम की ओर बढ़ने और नौ दिसंबर को आधी रात के आसपास 70 किलोमीटर प्रति घंटे की हवाओं के साथ पुडुचेरी तथा श्रीहरिकोटा के बीच उत्तरी तमिलनाडु, पुडुचेरी और आस-पास के आंध्र प्रदेश के दक्षिणी तट से गुजरने की संभावना है।

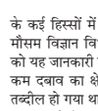

राजनीति

केजरीवाल और कांग्रेस के बीच कमाल कर गया कमल

नीरंजन परिहार

नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने गुजरात में बीजेपी की जागीर को बनाए रखते हुए पहले से भी ज्यादा बहुमत से जीतकर कांग्रेस को वो पटखनी दी है, जिसकी देश की सबसे पुरानी पार्टी और उसके नेताओं ने कभी कल्पना भी नहीं की थी। गुजरात विधानसभा की कुल 182 सीटों में भाजपा ने 150 सीटें जीतने का लक्ष्य रखा था। लेकिन गुजरात की जनता ने बीजेपी को लक्ष्य से भी अधिक सीटें देकर उनकी झोली भर दी है। वहीं, दूसरी ओर कांग्रेस को कुल सीटों का न्यूनतम 10 प्रतिशत यानी 18 सीटें भी नहीं मिली कि वो विधानसभा में विपक्ष की भूमिका निभा सके। हां, बहुत शोरगुल के बीच आम आदमी पार्टी ने गुजरात में अपना खाता जरूर खोल लिया है।

गुजरात में लगातार 6वीं बार बीजेपी की सरकार बन रही है और यह गुजरात के अब तक के लोकतांत्रिक इतिहास का सबसे बड़ा बहुमत है। इससे पहले 1980 में माधवसिंह सोलंकी ने क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी और मुसलमान वोटों के जातिगत गणित की खाम पद्धति के जरिए जीत दर्ज की थी, और वे कांग्रेस को 149 सीटों पर जिताने में सफल रहे थे। लेकिन इस बार मुख्यमंत्री के रूप में भले ही भूपेंद्र पटेल हो, पर जीत नरेंद्र मोदी की मेहनत के कारण संभव हुई है। गुजरात में मोदी ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़कर अपने घोषित लक्ष्य 150 सीटों से भी ज्यादा सीटों पर जिताते हुए बीजेपी को अब तक के सबसे ऊंचे शिखर पर पहुंचा दिया है।

जीत के लिए कांग्रेस से बीजेपी को मिले तानों और मोदी को मिली %गालियां% तो सिर्फ प्रचार की बात थी, लेकिन मोदी और उनकी बीजेपी का पूरा फोकस ओबीसी पर रहा, जिसे कांग्रेस समझ ही नहीं पाई। गुजरात का जातिगत समीकरण दूसरे राज्यों से बिल्कुल अलग है। यहां पिछड़ी जातियों की सबसे ज्यादा अधिकता है। राज्य की लगभग 7 करोड़ से ज्यादा की जनसंख्या में 52 फीसदी मतदाता पिछड़ा वर्ग की 146 जातियों से ही आते हैं, बीजेपी पूरी तरह से इसी पर केंद्रित रही और सफल भी हुई।

कांग्रेस ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि उसे गुजरात में इतनी बुरी हार मिलेगी। 2012 में कांग्रेस ने 61 सीटें जीती तो 2017 के चुनाव में 77 सीटों पर कामयाब रही, जबकि बीजेपी की सीटें 2017 के चुनाव में 115 से घट कर 99 रह गई थीं। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से स्थिति बदली और पिछली बार के मुकाबले कांग्रेस ने इस बार 2022 में अपनी 60 सीटें खो दी, कई दमदार व नामी नेता भी खो दिए और अब वह इतिहास की सबसे कम सीटों पर सिमट गई है।

पिछली बार की जीती हुई 99 सीटों से बढ़त लेकर बीजेपी ने 150 से ज्यादा सीटों पर जीत दर्ज की है और रणनीतिक रूप से बड़ी कसावट के साथ गुजरात का चुनाव लड़ा। माना जा रहा है कि यह उसके लिए अगले साल 2024 के आम चुनाव की रिहर्सल थी। चुनाव की कमान अमित शाह के हाथ में रही और प्रदेश अध्यक्ष के रूप में दबंग सांसद सीआर पाटिल पूरी ताकत से ग्राउंड पर मेहनत कर रहे थे। साथ ही बीजेपी ने हर हाल में अपने वोट बैंक को न केवल सम्हाले रखा बल्कि उसमें लगातार बढ़ोतरी भी करती रही। उधर, गुजरात में कांग्रेस की हवा निकल गई है, कारण यही है कि वह रणनीतिक रूप से बीजेपी के माइंड गेम में फंस गई। चुनाव शुरू होते ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्यकर्ताओं से कहा था कि कांग्रेस कमजोर नहीं है, वह बहुत मजबूत है और साइलेंट प्रचार कर रही है... फिर मोदी ने अपनी कही इस बात का प्रचार भी जमकर करवाया। कांग्रेस बस यहीं गच्चा खा गई, मोदी के माइंड गेम में उलझ गई और उसके नेताओं ने भी यह कहना शुरू कर दिया कि जब प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि कांग्रेस बेहद मजबूत है तो है, सो जीत पक्की है। कांग्रेस इस तरह से हवा में ही रही। पता नहीं उसे क्यों लग रहा था कि वह गुजरात जीत रही है। इसीलिए पहले चरण के मतदान के बाद गुजरात कांग्रेस के प्रभारी रघु शर्मा का दावा था कि सरकार हम बनाएंगे क्योंकि इस पहले चरण की 89 सीटों में से हम 65 सीटें जीत रहे हैं तथा अगले चरण में भी इतनी ही सीटें जीतेंगे। चुनाव परिणाम के बाद अब कांग्रेस की सारी हवा निकल गई और लगभग पूरी कांग्रेस ही हवा - हवाई हो गई। गुजरात में यह बहुत प्रचलित तथ्य है कि गुजरात कांग्रेस के ज्यादातर बड़े नेता बीजेपी के पे-रोल पर ही कांग्रेस में हैं। कांग्रेस की गुजरात में यह सबसे बड़ी कमजोरी रही कि पूरे चुनाव में साफ लगता रहा कि उसके नेता किसी न किसी रूप में बीजेपी को फायदा पहुंचाने के लिए कांग्रेस में बने हुए है। यहां तक कि गुजरात कांग्रेस के अध्यक्ष जगदीश ठाकोर को जब जब चुनाव लड़ने का प्रस्ताव दिया गया, तो वे उससे बचते रहे। कांग्रेस कार्यकर्ता खुद ही कहते रहे कि जिस पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष ही चुनाव लड़ने से डरता हो, वहां पार्टी कैसे जीतेगी, यह सबसे बड़ा सवाल बना रहा।